सूक्तयः

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» ग्रन्थ-परिचय: 'तिरुक्कुरल'

प्रश्न 1 (आसान). 'तिरुक्कुरल' किस भाषा का ग्रंथ है?
उत्तर – तमिल भाषा

प्रश्न 2 (आसान). 'तिरुक्कुरल' के लेखक का नाम क्या है?
उत्तर – तिरुवल्लुवर

प्रश्न 3 (मध्यम). तमिल भाषा में 'तिरुक्कुरल' को क्या कहा जाता है?
उत्तर – तमिल का वेद

प्रश्न 4 (कठिन). 'तिरुक्कुरल' का रचनाकाल क्या है और इसमें मुख्य रूप से किन विषयों पर चर्चा की गई है?
उत्तर – प्रथम शताब्दी; धर्म, अर्थ और काम

» पुत्र के प्रति पिता का कर्तव्य और कृतज्ञता

प्रश्न 5 (आसान). पिता पुत्र को बचपन में कौन सा धन देता है?
उत्तर – विद्या रूपी धन

प्रश्न 6 (आसान). पुत्र की कृतज्ञता क्या है?
उत्तर – यह समझना कि पिता ने उसे शिक्षित करने के लिए कितनी तपस्या की है।

प्रश्न 7 (मध्यम). इस श्लोक के अनुसार, विद्या को 'महान धन' क्यों कहा गया है?
उत्तर – क्योंकि विद्या ही सबसे अमूल्य धन है जो हमें जीवन में आगे बढ़ने और सफल होने में मदद करती है, और यह कोई नहीं छीन सकता।

प्रश्न 8 (कठिन). इस श्लोक से हमें अपने माता-पिता के प्रति कैसा व्यवहार करने की प्रेरणा मिलती है?
उत्तर – इस श्लोक से हमें अपने माता-पिता के प्रति सम्मान, प्रेम और कृतज्ञता का भाव रखने की प्रेरणा मिलती है। हमें उनकी मेहनत और त्याग को समझना चाहिए और उन्हें कभी दुखी नहीं करना चाहिए।

» चित्त और वाणी में समत्व का महत्व

प्रश्न 9 (आसान). समत्व का क्या अर्थ है?
उत्तर – मन और वाणी में सरलता या एकरूपता।

प्रश्न 10 (आसान). क्या छल-कपट वाली बात समत्व कहलाएगी?
उत्तर – नहीं।

प्रश्न 11 (मध्यम). महात्मा लोग किस गुण को समत्व कहते हैं?
उत्तर – जब चित्त (मन) में सरलता हो और वाणी में भी वही सरलता हो, तो उसे ही महात्मा समत्व कहते हैं।

प्रश्न 12 (कठिन). अपने शब्दों में 'चित्त और वाणी में समत्व का महत्व' समझाइए।
उत्तर – जब व्यक्ति का मन और उसकी बोली एक समान, सरल और ईमानदार होती है, बिना किसी छल-कपट के, तो यही गुण समत्व कहलाता है। यह गुण हमें दूसरों का विश्वास जीतने में मदद करता है और हमें एक सच्चा इंसान बनाता है।

» धर्मप्रद वाणी और कटु वाणी का भेद

प्रश्न 13 (आसान). धर्मप्रद वाणी कैसी वाणी होती है?
उत्तर – मधुर और अच्छी वाणी।

प्रश्न 14 (आसान). कटु वाणी का क्या अर्थ है?
उत्तर – कठोर या कड़वी वाणी।

प्रश्न 15 (मध्यम). जो व्यक्ति कठोर वाणी बोलता है, उसे श्लोक में क्या कहा गया है?
उत्तर – विमूढधीः (मूर्ख)।

प्रश्न 16 (कठिन). कठोर वाणी बोलने वाले की तुलना पके और कच्चे फल के उदाहरण से क्यों की गई है?
उत्तर – क्योंकि मीठी बातें पके फल की तरह मन को अच्छी लगती हैं और लाभदायक होती हैं, जबकि कठोर बातें कच्चे फल की तरह कड़वी और अनुपयोगी होती हैं।

» सच्चे चक्षुष्मान् कौन हैं

प्रश्न 17 (आसान). कौन लोग इस संसार में 'चक्षुष्मान्' कहे जाते हैं?
उत्तर – विद्वान लोग।

प्रश्न 18 (आसान). जो आँखें हमारे मुख पर होती हैं, श्लोक के अनुसार वे कैसी हैं?
उत्तर – नाममात्र की।

प्रश्न 19 (मध्यम). 'चक्षुष्मान्' शब्द का यहाँ क्या अर्थ है?
उत्तर – ज्ञान रूपी नेत्रों वाला।

प्रश्न 20 (कठिन). ज्ञान और भौतिक आँखों में क्या अंतर है जो श्लोक में बताया गया है?
उत्तर – भौतिक आँखें केवल बाहरी चीज़ें दिखाती हैं, जबकि ज्ञान रूपी आँखें हमें सत्य और विवेक को देखने में मदद करती हैं।

» विवेक की परिभाषा

प्रश्न 21 (आसान). अगर कोई बच्चा रो रहा है और कहता है, "मुझे अब स्कूल नहीं जाना!", तो विवेक से आप इसका क्या अर्थ निकालेंगे?
उत्तर – शायद बच्चा स्कूल से थका हुआ है, या उसे कोई छोटी-मोटी दिक्कत हुई है, न कि उसे सच में स्कूल से हमेशा के लिए नफरत हो गई है।

प्रश्न 22 (आसान). जब माँ गुस्से में कहती हैं, "तुम बिल्कुल मेरी बात नहीं सुनते!", तो आप विवेक से क्या समझेंगे?
उत्तर – माँ परेशान हैं और चाहती हैं कि आप उनकी बात ध्यान से सुनें, न कि आप सच में हमेशा उनकी बातें अनसुनी करते हैं।

प्रश्न 23 (मध्यम). एक नेता भाषण में कहते हैं, "मैं आपको अच्छे दिन दूंगा।" विवेकशील व्यक्ति इस पर कैसे विचार करेगा?
उत्तर – वह केवल शब्दों पर नहीं जाएगा, बल्कि नेता के पिछले कार्यों, योजनाओं और उनकी व्यवहार्यता पर विचार करेगा कि क्या ये वादे पूरे हो सकते हैं।

प्रश्न 24 (कठिन). एक विज्ञापन में कहा गया है कि यह प्रोडक्ट आपको 'सबसे सुंदर' बना देगा। विवेक से आप इस दावे को कैसे समझेंगे?
उत्तर – विवेकशील व्यक्ति समझेगा कि यह एक अतिशयोक्तिपूर्ण दावा है जो ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए किया गया है। सुंदरता केवल प्रोडक्ट से नहीं आती, और 'सबसे सुंदर' होना एक व्यक्तिपरक धारणा है।

» कुशल मंत्री के गुण

प्रश्न 25 (आसान). एक अच्छे मंत्री का पहला गुण क्या होना चाहिए?
उत्तर – वाक्पटु (बोलने में चतुर)

प्रश्न 26 (आसान). मंत्री को सभा में कैसा होना चाहिए?
उत्तर – निडर (अकातरः)

प्रश्न 27 (मध्यम). किस गुण के कारण शत्रु भी मंत्री को पराजित नहीं कर सकते?
उत्तर – वाक्पटुता, धैर्य और सभा में निडरता।

प्रश्न 28 (कठिन). अगर कोई मंत्री सभा में हकलाता है और डर जाता है, तो क्या वह कुशल मंत्री कहलाएगा? क्यों?
उत्तर – नहीं, क्योंकि वह 'वाक्पटु' और 'अकातर' नहीं है, और ऐसे में वह शत्रु के सामने अपने पक्ष को ठीक से नहीं रख पाएगा।

» आत्म-कल्याण और दूसरों के प्रति व्यवहार

प्रश्न 29 (आसान). कौन अपना कल्याण चाहता है?
उत्तर – यः आत्मनः श्रेयः इच्छति।

प्रश्न 30 (आसान). उसे दूसरों के प्रति क्या नहीं करना चाहिए?
उत्तर – अहितं कर्म।

प्रश्न 31 (मध्यम). एक वाक्य में बताएं कि श्लोक 7 क्या शिक्षा देता है?
उत्तर – यह श्लोक शिक्षा देता है कि जो अपना कल्याण और अत्यधिक सुख चाहता है, उसे कभी भी दूसरों का अहित नहीं करना चाहिए।

» सदाचार का परम धर्म

प्रश्न 32 (आसान). विद्वानों ने किसे प्रथम धर्म कहा है?
उत्तर – सदाचार को।

प्रश्न 33 (आसान). सदाचार की रक्षा किससे बढ़कर करनी चाहिए?
उत्तर – प्राणों से भी बढ़कर।

प्रश्न 34 (मध्यम). आपके अनुसार, सदाचार के कुछ उदाहरण दीजिए जो आप अपने दैनिक जीवन में देखते हैं।
उत्तर – बड़ों का आदर करना, सच बोलना, ईमानदार रहना, दूसरों की मदद करना, साफ-सफाई रखना।

प्रश्न 35 (कठिन). अगर हमें सदाचार और किसी भौतिक लाभ में से एक को चुनना पड़े, तो हमें किसे चुनना चाहिए और क्यों?
उत्तर – हमें सदाचार को चुनना चाहिए। भौतिक लाभ तो अस्थायी होते हैं, लेकिन सदाचार से हमारा चरित्र बनता है, समाज में हमें मान-सम्मान मिलता है और अंततः यही हमें सच्चा सुख और शांति देता है।

» शब्दार्थ और अभ्यास कार्य

प्रश्न 36 (आसान). शब्दार्थ: 'अवक्रता' का अर्थ क्या है?
उत्तर – सरलता

प्रश्न 37 (आसान). एकपदेन उत्तर: 'प्राणेभ्योऽपि कः रक्षणीयः?'
उत्तर – सदाचारः

प्रश्न 38 (मध्यम). प्रश्न-निर्माण: 'विद्वांसः ज्ञानचक्षुर्भिः नेत्रावन्तः कथ्यन्ते।' (विद्वांसः को आधार बनाकर)
उत्तर – के ज्ञानचक्षुर्भिः नेत्रावन्तः कथ्यन्ते?

प्रश्न 39 (कठिन). अन्वय-पूर्ति: 'पिता ____ बाल्ये महत् विद्याध्नं यच्छति, अस्य पिता किं तपः तेपे इत्युक्तिः ____।' (लुप्त पद भरें)

उत्तर – पिता पुत्राय बाल्ये महत् विद्याध्नं यच्छति, अस्य पिता किं तपः तेपे इत्युक्तिः तत्कृतज्ञता।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. प्रश्न: 'तिरुक्कुरल' ग्रंथ के विषय में जानकारी दें।

› पहला कदम: हमें बताना है कि यह किस भाषा का ग्रंथ है। यह तमिल भाषा का ग्रंथ है।

› दूसरा कदम: इसके लेखक का नाम बताना है। इसके लेखक 'तिरुवल्लुवर' हैं।

› तीसरा कदम: इसका रचनाकाल बताना है। इसका रचनाकाल प्रथम शताब्दी माना जाता है।

› चौथा कदम: यह भी बताना है कि इसे तमिल भाषा में क्या कहा जाता है। इसे तमिल का 'वेद' कहते हैं।

› पांचवां कदम: इसमें किन विषयों पर चर्चा की गई है, यह भी बताना है। इसमें धर्म, अर्थ और काम (जीवन के उद्देश्य) पर विचार हैं।

उत्तर – 'तिरुक्कुरल' तमिल भाषा का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है, जिसके लेखक 'तिरुवल्लुवर' हैं। यह ग्रंथ प्रथम शताब्दी में लिखा गया था और इसे तमिल भाषा का 'वेद' माना जाता है। इसमें धर्म, अर्थ और काम जैसे जीवनोपयोगी सत्य का प्रतिपादन किया गया है।

उदाहरण 2. यह श्लोक पिता और पुत्र के संबंध में कौन सा महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करता है?

› श्लोक का पहला भाग देखें: 'पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याध्नं महत्'। इसका अर्थ है कि पिता पुत्र को बचपन में महान विद्या रूपी धन देता है।

› श्लोक का दूसरा भाग देखें: 'पितास्य विंफ तपस्तेपे इत्युक्तिस्तत्कृतज्ञता'। इसका अर्थ है कि 'पिता ने उसके लिए कितनी तपस्या की है' - यह कहना ही पुत्र की कृतज्ञता है।

› दोनों भागों को मिलाकर देखें। पिता का कर्तव्य है पुत्र को विद्या देना, और पुत्र का कर्तव्य है पिता के इस त्याग और तपस्या को समझना तथा उसके प्रति कृतज्ञ होना।

उत्तर – यह श्लोक बताता है कि पिता का कर्तव्य पुत्र को बचपन में विद्या रूपी धन देना है, और पुत्र की सच्ची कृतज्ञता यह स्वीकार करने में है कि पिता ने उसे शिक्षित करने के लिए बहुत तपस्या और त्याग किया है।

उदाहरण 3. एक व्यक्ति मन में कुछ और सोच रहा है और मुंह से कुछ और बोल रहा है। क्या यह समत्व है?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'समत्व' का अर्थ क्या है। समत्व का अर्थ है मन और वाणी में सरलता या एकरूपता।

› दूसरा कदम: दिए गए उदाहरण में, व्यक्ति के मन और वाणी में भिन्नता है (मन में कुछ और, वाणी में कुछ और)।

› तीसरा कदम: चूँकि मन और वाणी में समानता नहीं है, यह समत्व नहीं कहलाएगा।

उत्तर – नहीं, यह समत्व नहीं है।

उदाहरण 4. धर्मप्रद वाणी को छोड़कर कठोर वाणी बोलने वाले व्यक्ति की तुलना किससे की गई है?

› श्लोक का भावार्थ समझेंगे।

› श्लोक में स्पष्ट कहा गया है कि जो व्यक्ति धर्मप्रद वाणी को त्याग कर कटु वाणी बोलता है, वह मूर्ख के समान है।

› मूर्ख की उपमा पके फल को छोड़कर कच्चे फल को खाने वाले व्यक्ति से की गई है।

उत्तर – धर्मप्रद वाणी को छोड़कर कठोर वाणी बोलने वाले व्यक्ति की तुलना उस मूर्ख व्यक्ति से की गई है, जो पके हुए फल को त्याग कर कच्चे फल को खाता है।

उदाहरण 5. हमारे श्लोक के अनुसार, 'सच्चे चक्षुष्मान्' किन्हें कहा गया है और क्यों?

› श्लोक 'विद्वांस एव लोकेस्मिन् चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः' कहता है कि इस संसार में विद्वानों को ही चक्षुष्मान् कहा गया है।

› आगे लिखा है 'अन्येषां वदने ये तु ते चक्षुर्नामनी मते', यानी दूसरों के मुख पर जो आँखें हैं, वे तो बस नाम मात्र की हैं।

› इसका अर्थ है कि 'सच्चे चक्षुष्मान्' वे हैं जो अपनी ज्ञान रूपी आँखों से सत्य को देख पाते हैं, सही-गलत का भेद कर पाते हैं।

› केवल भौतिक आँखें हमें बाहरी चीज़ें दिखाती हैं, पर ज्ञान की आँखें हमें गहरी समझ देती हैं।

उत्तर – श्लोक के अनुसार, 'सच्चे चक्षुष्मान्' सिर्फ़ विद्वानों को कहा गया है, क्योंकि उनके पास ज्ञान रूपी नेत्र होते हैं जिनसे वे सत्य को देख व समझ पाते हैं, जबकि दूसरों की आँखें केवल नाममात्र की होती हैं।

उदाहरण 6. एक दोस्त ने तुमसे कहा, "अरे, तुम तो कभी काम नहीं करते!" इस बात का तुम विवेकपूर्ण तरीके से क्या अर्थ निकालोगे, अगर तुम जानते हो कि तुम्हारा दोस्त मज़ाक कर रहा था?

› पहला कदम: दोस्त के शब्दों को सीधा नहीं लेना है।

› दूसरा कदम: यह सोचना है कि दोस्त ने ये बात किस लहज़े में कही और उसका स्वभाव कैसा है। क्या वो अक्सर मज़ाक करता है?

› तीसरा कदम: अपनी और उसकी दोस्ती के इतिहास को याद करना कि क्या उसने पहले कभी ऐसी बात गंभीरता से कही है।

› चौथा कदम: यह निष्कर्ष निकालना कि उसने शायद मज़ाक में या तुम्हें छेड़ने के लिए ऐसा कहा होगा, न कि सच में उसे लगता है कि तुम काम नहीं करते।

उत्तर – विवेकपूर्ण तरीके से यह समझना कि दोस्त मज़ाक कर रहा था, और उसकी बात का असली मतलब यह नहीं है कि तुम सच में आलसी हो।

उदाहरण 7. एक राजा के सामने दूसरे राज्य से एक चुनौती आई है। मंत्री को दूसरे राज्य के दूत के सामने राजा का पक्ष रखना है। एक कुशल मंत्री इस स्थिति में कैसा व्यवहार करेगा?

› पहला कदम: मंत्री दूत की बात को शांति और धैर्य से सुनेगा, चाहे बात कितनी भी भड़काने वाली क्यों न हो।

› दूसरा कदम: वह बिना किसी डर या घबराहट के, पूरी सभा के सामने, राजा के सम्मान को बनाए रखते हुए, अपने राज्य का पक्ष मजबूती से रखेगा।

› तीसरा कदम: अपनी बात को इतने स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से कहेगा कि दूत को राजा के निर्णय को मानने के लिए मजबूर होना पड़े, या कम से कम वह कोई आपत्ति न उठा पाए।

उत्तर – इस स्थिति में कुशल मंत्री 'वाक्पटु', 'धैर्यवान' और 'सभायामप्यकातरः' होकर अपने राज्य की इज़्ज़त बचाएगा और शत्रु को पराजित होने पर मजबूर करेगा।

उदाहरण 8. संस्कृत में इस विचार को कैसे व्यक्त करेंगे कि 'जो व्यक्ति अपना भला चाहता है, उसे दूसरों का बुरा नहीं करना चाहिए'?

› पहले श्लोक का मुख्य भाव समझें: अपना श्रेय/सुख चाहने वाला दूसरों का अहित न करे।

› संस्कृत में 'अपना श्रेय चाहने वाला' के लिए 'यः आत्मनः श्रेयः इच्छति' का प्रयोग करेंगे।

› 'बहुत सारे सुख' के लिए 'प्रभूतानि सुखानि च' जोड़ेंगे।

› 'दूसरों का अहित' के लिए 'परेभ्यः अहितं कर्म' और 'कभी नहीं करना चाहिए' के लिए 'कदापि च न कुर्यात्' जोड़ेंगे।

उत्तर – य इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च। न वुफर्यादहितं कर्म स परेभ्यः कदापि च।।

उदाहरण 9. सदाचार की रक्षा क्यों इतनी महत्वपूर्ण मानी गई है?

› पहला चरण: प्रश्न को समझें। यहाँ सदाचार के महत्व पर ज़ोर दिया गया है।

› दूसरा चरण: श्लोक और उसके भावार्थ को याद करें। श्लोक कहता है 'आचारः प्रथमो धर्मः' और 'प्राणेभ्योऽपि विशेषतः' इसकी रक्षा करनी चाहिए।

› तीसरा चरण: व्याख्या करें कि क्यों ऐसा कहा गया है। सदाचार ही वह आधार है जिस पर हमारा पूरा जीवन, हमारे संबंध और हमारा समाज टिका हुआ है। यह हमें सही-गलत की पहचान कराता है और हमें एक अच्छा इंसान बनाता है।

› चौथा चरण: निष्कर्ष निकालें। क्योंकि सदाचार ही सभी धर्मों में प्रथम है और यह हमारे व्यक्तित्व व समाज की नींव है, इसलिए इसकी रक्षा प्राणों से भी बढ़कर करनी चाहिए।

उत्तर – सदाचार को सभी धर्मों में प्रथम माना गया है क्योंकि यह हमारे चरित्र का आधार है और हमारे जीवन को सही दिशा देता है। एक सदाचारी व्यक्ति ही समाज और स्वयं का कल्याण कर सकता है। इसलिए, इसकी रक्षा अपने प्राणों से भी बढ़कर करनी चाहिए।

उदाहरण 10. उदाहरण के लिए, श्लोक 1 में है: 'पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याध्नं महत्।' इसका 'एकपदेन उत्तर' कैसे लिखें?

› सबसे पहले प्रश्न पढ़ो: 'पिता पुत्राय बाल्ये किं यच्छति?'

› अब श्लोक को समझो: 'पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याध्नं महत्।' मतलब पिता पुत्र को बचपन में महान विद्या रूपी धन देता है।

› प्रश्न में 'किं' पूछा है, यानी 'क्या' देता है। श्लोक में इसका उत्तर 'विद्याध्नं महत्' है।

› हमें 'एकपदेन उत्तर' देना है, तो सबसे सटीक एक शब्द 'विद्याध्नम्' होगा।

उत्तर – विद्याध्नम्

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह प्रश्न अक्सर छोटे उत्तर वाले या बहुविकल्पीय प्रश्नों में पूछा जाता है, खासकर लेखक, भाषा और ग्रंथ के महत्व के बारे में।

• यह श्लोक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इसका हिंदी अनुवाद या भावार्थ पूछा जाता है। शब्दों के अर्थ और भावार्थ को ध्यान से समझना।

• यह श्लोक बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। श्लोक का भावार्थ और 'समत्व' की परिभाषा अच्छे से याद कर लेना।

• यह श्लोक भावार्थ के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। श्लोक से जुड़े एकपदेंन उत्तरत और भावार्थ वाले प्रश्न अक्सर आते हैं।

• यह श्लोक बहुत महत्वपूर्ण है, इसे अच्छे से समझना और इसके भावार्थ को याद रखना। परीक्षा में सीधा प्रश्न आ सकता है कि 'सच्चे चक्षुष्मान् कौन हैं' या 'विद्वानों को ही चक्षुष्मान् क्यों कहा गया है'।

• यह श्लोक बहुत महत्वपूर्ण है! परीक्षा में 'विवेक' की परिभाषा संस्कृत में लिखने या उसका भावार्थ समझाने को आ सकता है, इसलिए इसे अच्छे से समझना और याद करना।

• यह श्लोक परीक्षा में 'कुशल मंत्री के गुण' या 'कौन पराजित नहीं होता' जैसे प्रश्नों के उत्तर में महत्वपूर्ण है। इसके मुख्य गुण याद रखें।

• यह श्लोक नैतिक शिक्षा का महत्वपूर्ण बिंदु है, इसके भावार्थ और अन्वय पर आधारित प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं।

• यह श्लोक और इसका भावार्थ बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर आधारित सीधे प्रश्न या व्याख्या वाले प्रश्न आते हैं, इसलिए इसे अच्छे से याद कर लें।

• बोर्ड परीक्षा में शब्दार्थ सीधे नहीं पूछे जाते, पर अभ्यास कार्य बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, खासकर प्रश्न-निर्माण और अन्वय-पूर्ति। सही विभक्ति और क्रिया का ध्यान रखना।

एक नज़र में रिवीज़न

› 'तिरुक्कुरल' तमिल का वेद, लेखक तिरुवल्लुवर, प्रथम शताब्दी, धर्म-अर्थ-काम.
› पिता देता विद्या-धन, पुत्र की कृतज्ञता - पिता की तपस्या समझ।
› चित्त (मन) और वाणी में सरलता = समत्व।
› धर्मप्रद (मीठी) वाणी छोड़, कठोर बोलने वाला मूर्ख।
› विद्वान ही सच्चे चक्षुष्मान् (ज्ञान रूपी नेत्रों वाले) हैं।
› विवेक: कही बात का वास्तविक अर्थ जानने की क्षमता।
› कुशल मंत्री: वाक्पटु, धैर्यवान, सभा में निडर; शत्रु अपराजित।
› अपना कल्याण चाहने वाला, दूसरों का अहित न करे।
› सदाचार प्रथम धर्म, प्राणों से बढ़कर रक्षा।
› शब्दार्थ समझें, अभ्यास प्रश्न हल करने का तरीका सीखें।